बोध-प्रश्न

(*पाठ्यपुस्तक से*)

1. कथावाचक और हरिहर काका के बीच क्या संबंध है और इसके क्या कारण हैं?

उत्तर हरिहर काका और कथावाचक के बीच में गहरा संबंध था। दोनों एक ही गाँव के निवासी थे। कथावाचक हरिहर काका का बहुत सम्मान करता था। कथावाचक के हरिहर काका के प्रति लगाव के दो मुख्य कारण थे–

(क) हरिहर काका का घर कथावाचक के पड़ोस में था। पड़ोसी होने के कारण सुख-दुख में उनका साथ रहा।

(ख) लेखक की माँ के कथन के अनुसार हरिहर काका बचपन से उसे बहुत दुलार करते थे। वे एक पिता की भाँति उसे अपने कंधों पर बैठाकर घुमाया करते थे। वही दुलार बड़ा होने पर दोस्ती में बदल गया।

2. हरिहर काका को महंत और अपने भाई एक ही श्रेणी में क्यों लगने लगे?

उत्तर हरिहर काका एक निःसंतान व्यक्ति थे। उनके पास पंद्रह बीघे जमीन थी। हरिहर काका के भाइयों ने पहले तो उनकी खूब देखभाल की परंतु धीरे-धीरे उनकी पत्नियों ने काका के साथ दुर्व्यवहार करना शुरू कर दिया। महंत को जब यह पता चला तो वह बहला-फुसलाकर काका को ठाकुरबारी ले आए और उन्हें वहाँ रखकर उनकी खूब सेवा की। साथ ही उसने काका से उनकी पंद्रह बीघे जमीन ठाकुरबारी के नाम लिखवाने की बात की। काका ने जब ऐसा करने से मना किया तो महंत ने उन्हें मार-पीटकर जबरदस्ती कागज़ों पर अँगूठा लगवा दिया। इस बात पर दोनों पक्षों में जमकर झगड़ा हुआ। दोनों ही पक्ष स्वार्थी थे। वे हरिहर काका को सुख नहीं दुख देने पर उतारू थे। उनका हित नहीं अहित करने के पक्ष में थे। दोनों का लक्ष्य जमीन हथियाना था। इसके लिए दोनों ने ही काका के साथ छल व बल का प्रयोग किया। इसी कारण हरिहर काका को अपने भाई और महंत एक ही श्रेणी के लगने लगे।

3. ठाकुरबारी के प्रति गाँव वालों के मन में अपार श्रद्धा के जो भाव हैं उससे उनकी किस मनोवृत्ति का पता चलता है?

उत्तर ठाकुरबारी गाँव में एक प्राचीन धार्मिक स्थल है। ठाकुरबारी के संबंध में जो कहानी प्रचलित है वह यह है कि वर्षों पहले जब यह गाँव पूरी तरह बसा भी नहीं था; कहीं से एक संत आकर इस स्थान पर झोंपड़ी बनाकर रहने लगे थे। वह सुबह-शाम यहाँ ठाकुरजी की पूजा करते थे। गाँव वालों ने चंदा जमा करके ठाकुर जी का एक छोटा-सा मंदिर बनवा दिया। आबादी बढ़ने के साथ-साथ ठाकुरबारी का विकास होता गया। गाँव के लोगों का मानना था कि उनके सभी काम ठाकुरजी की कृपा से पूरे होते हैं। पुत्र के जन्म पर, मुकदमें की जीत पर, लड़की की शादी अच्छी जगह तय होने पर, लड़के को नौकरी मिलने पर, वे अपनी खुशी से ठाकुर जी पर रुपये, जेवर, अनाज आदि चढ़ाते थे। अधिक खुशी होती तो ठाकुरजी के नाम अपने खेत का एक छोटा-सा टुकड़ा लिख देते। इससे पता चलता है कि गाँव

Scanned with CamScanner

वालों में ठाकुरजी के प्रति अपार श्रद्धा थी। वे धार्मिक प्रवृत्ति के थे। वे अपनी हर सफलता का श्रेय ठाकुर जी को देकर अपनी श्रद्धा और विनम्रता व्यक्त करते हैं।

4. अनपढ़ होते हुए भी हरिहर काका दुनिया की बेहतर समझ रखते हैं– कहानी के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर अनपढ़ होते हुए भी हरिहर काका दुनिया की बेहतर समझ रखते हैं। वे जानते है कि जब तक उनकी जमीन-जायदाद उनके पास है, तब तक सभी उनका आदर करते हैं। ठाकुरबारी के महंत उनको इसलिए समझाते हैं क्योंकि वह उनकी जमीन ठाकुरबारी के नाम करवाना चाहते हैं। उनके भाई उनका आदर-सत्कार जमीन के कारण करते हैं। हरिहर काका ऐसे कई लोगों को जानते हैं जिन्होंने अपने जीते जी अपनी जमीन किसी और के नाम लिख दी थी। बाद में उनका जीवन नरक बन गया था। वे नहीं चाहते थे कि उनके साथ भी ऐसा हो।

5. हरिहर काका को जबरन उठा ले जाने वाले कौन थे? उन्होंने उनके साथ कैसा बर्ताव किया?

उत्तर हरिहर काका को जबरन उठा ले जाने वाले ठाकुरबारी के महंत के भेजे हुए आदमी थे। वे ठाकुरबारी के साधु-संत और महंत के पक्षधर थे। वे लोग भाला, गँड़ासा और डंडे से लैस होकर आधी रात के समय हरिहर काका के घर आए और उन्हें जबरदस्ती अपनी पीठ पर लादकर चंपत हो गए।

महंत और उनके साथियों ने हरिहर काका के साथ बुरा व्यवहार किया। उन्होंने काका के हाथ-पाँव बाँधकर मुँह में कपड़ा ठूँसकर जबरन जमीन के कागज़ों पर अँगूठे के निशान लगवाए। उसके बाद उन्होंने काका को अनाज के गोदाम में बंद कर दिया।

6. हरिहर काका के मामले में गाँव वालों की क्या राय थी? और उसके क्या कारण थे?

उत्तर हरिहर काका के मामले में गाँव के लोगों के दो वर्ग बन गए थे। दोनों ही पक्ष के लोगों की अपनी-अपनी राय थी। आधे लोग परिवार वालों के पक्ष में थे। उनका कहना था कि काका की जमीन पर हक तो उनके परिवार वालों का बनता है। काका को अपनी ज़मीन-जायदाद अपने भाइयों के नाम लिख देनी चाहिए, ऐसा न करना अन्याय होगा। दूसरे पक्ष के लोगों का मानना था कि महंत हरिहर की ज़मीन उनको मोक्ष दिलाने के लिए लेना चाहता है। काका को अपनी ज़मीन ठाकुरजी के नाम लिख देनी चाहिए। इससे उनका नाम यश भी फैलेगा और उन्हें सीधे बैकुंठ की प्राप्ति होगी।

इस प्रकार जितने मुँह थे उतनी बातें होने लगी। प्रत्येक का अपना मत था। इन सबका एक कारण था कि हरिहर काका विधुर थे और उनकी अपनी कोई संतान न थी जो उनका उत्तराधिकारी बनता। पंद्रह बीघे जमीन के कारण इन सबका लालच स्वाभाविक था।

7. कहानी के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि लेखक ने यह क्यों कहा, "अज्ञान की स्थिति में ही मनुष्य मृत्यु से डरते हैं। ज्ञान होने के बाद तो आदमी आवश्यकता पड़ने पर मृत्यु को वरण करने के लिए तैयार हो जाता है।"

उत्तर लेखक ने ऐसा इसलिए कहा है क्योंकि हरिहर काका दोनों ही स्थितियों से गुजरते हैं। पहले जब वे अज्ञान की स्थिति में थे तो मृत्यु से डरते थे परंतु बाद में ज्ञान होने पर वे मृत्यु का वरण करने का तैयार हो जाते हैं। ज्ञान होने पर काका को वे सब लोग याद आ जाते हैं जिन्होंने परिवार वालों की मोहमाया में फँसकर अपनी ज़मीन उनके नाम कर दी। बाद में वे लोग दाने-दाने को मोहताज़ हो गए। काका सोचने लगे कि ऐसी दुर्गति होने से तो अच्छा है कि लोग उन्हें एक ही बार मार दें।

कहानी में महंत एवं काका के भाई उनकी ज़मीन अपने नाम करवाने के लिए कई युक्तियाँ अपनाते हैं। महंत काका का अपहरण करवाता है। उसके आदमी काका को उठा ले जाते हैं, उन्हें डराते-धमकाते हैं। काका के भाई भी उन्हें डरा-धमकाकर ज़मीन अपने नाम करवाना चाहते हैं परंतु हरिहर काका पर उनकी धमकियों का कोई असर नहीं होता।

Scanned with CamScanner

वे मृत्यु का वरण करने के लिए तैयार हो जाते हैं। उन्हें लगता है कि मृत्यु तो एक दिन होना ही है अतः मृत्यु से डरना व्यर्थ है। हरिहर काका की इसी मनः स्थिति के कारण लेखक ने उक्त कथन कहा।

8. समाज में रिश्तों की क्या अहमियत है? इस विषय पर अपने विचार प्रकट कीजिए।

उत्तर आज समाज में मानवीय मूल्य तथा पारिवारिक मूल्य धीरे-धीरे समाप्त होते जा रहे हैं। ज्यादातर व्यक्ति अपने स्वार्थ के लिए रिश्ते-नाते निभाते हैं। अब रिश्तों से ज्यादा रिश्तेदार की कामयाबी और स्वार्थ सिद्धि की अहमियत है। रिश्ते ही उसे अपने पराए में अंतर करने की पहचान करवाते है। रिश्तों के द्वारा व्यक्ति की समाज में विशेष भूमिका निर्धारित होती है। रिश्ते ही सुख-दुख में काम आते हैं। यह दुख की बात है कि आज के इस बदलते दौर में रिश्तों पर स्वार्थ की भावना हावी होती जा रही है। रिश्तों में प्यार व बंधुत्व समाप्त हो गया है। इस कहानी में भी यदि पुलिस न पहुँचती तो परिवार वाले काका की हत्या कर देते। इंसानियत तथा रिश्तों का खून तब स्पष्ट नज़र आता है जब महंत तथा परिवार वालों को काका के लिए अफ़सोस नहीं बल्कि उनकी हत्या न कर पाने का अफ़सोस है। ठीक इसी प्रकार आज रिश्तों से ज़्यादा धन-दौलत को अहमियत दी जा रही है।

9. यदि आपके आसपास हरिहर काका जैसी हालत में कोई हो तो आप उसकी किस प्रकार मदद करेंगे?

उत्तर यदि हमारे घर के आसपास कोई हरिहर काका जैसी दशा में होगा तो हम उसकी हर संभव मदद करेंगे। पहले तो उसके परिवार वालों को समझाएँगे कि वे उस व्यक्ति के साथ इस तरह का व्यवहार न करें, उसे प्यार, सम्मान और अपनापन दें। फिर भी यदि वे न माने तो पड़ोस के बड़े-बुजुर्गों की सहायता लेंगे कि वे उनकी किसी प्रकार की सहायता करें। यदि पुलिस की मदद लेनी पड़ेगी तो हम पीछे नहीं हटेंगे। हम कोशिश करेंगे कि मीडिया भी सहयोग करे और उस व्यक्ति को इंसाफ दिलवाए।

10. हरिहर काका के गाँव में यदि मीडिया की पहुँच होती तो उनकी क्या स्थिति होती? अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर हरिहर काका का जिस प्रकार से धर्म और घर अर्थात् खून के रिश्तों से विश्वास उठ चुका था, उससे वे मानसिक रूप से बीमार हो गए थे। वे बिल्कुल चुप रहते थे। किसी की भी कोई बात का कोई उत्तर नहीं देते थे। वर्तमान दृष्टि से यदि देखा जाए तो आज मीडिया की अहम् भूमिका है। लोगों को सच्चाई से अवगत करना उसका मुख्य कार्य है। जन-संचार के द्वारा घर-घर में बात पहुँचाई जा सकती है। इसके द्वारा लोगों तथा समाज तक बात पहुँचाना आसान है। यदि हरिहर काका की बात मीडिया तक पहुँच जाती तो शायद स्थिति थोड़ी भिन्न होती। वे अपनी बात लोगों के सामने रख पाते और स्वयं पर हुए अत्याचारों के विषय में लोगों को जागृत करते। हरिहर काका को मीडिया ठीक प्रकार से न्याय दिलवाती। उन्हें स्वतंत्र रूप से जीने की व्यवस्था उपलब्ध करवाने में मदद करती। अब जिस प्रकार के दबाव में वे जी रहे हैं वैसी स्थिति मीडिया की सहायता मिलने के बाद नहीं होती।

Scanned with CamScanner